eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 10, October 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.24191626

जलवायु परिवर्तन समस्या व समाधान : एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. चन्द्रशेखर प्राचार्य[1]
[1]सूरदास ब्रजरानी मैमोरियल महा0 सूरकुटी रूनकता, आगरा, सम्बद्ध–डॉ0 भी0 अंबेडकर वि0वि0 आगरा

Received: 21 July 2026 Accepted & Reviewed: 25 October 2026, Published: 31 October 2026

Abstract

वर्तमान समय में पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन की समस्या से जूझ रही है, जिसमें भारत भी अछूता नहीं है। जलवायु परिवर्तन से तात्पर्य पृथ्वी के तापमान और मौसम के स्वरूप में होने वाले दीर्घकालिक बदलाव से है। जलवायु परिवर्तन के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं तथा प्राकृतिक आपदाओं की घटनाओं में वृद्धि हो रही है। जो न केवल हमारे पर्यावरण को प्रभावित कर रहा है बल्कि मानव जीवन, कृषि, जल स्रोत और जैव विविधता पर भी गम्भीर असर डाल रहा है। इसलिए जलवायु परिवर्तन के साथ पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन माननीय एवं प्राकृतिक दोनों वजह से हो रहा है, जिसमें मानवीय कारणों का अधिक प्रभाव रहा है। मानवीय कारणों में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन जैसे मीथेन, कार्बन डाई ऑक्साइड, सल्फर डाई ऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड आदि के उत्सर्जन में वृद्धि पृथ्वी के तापमान में वृद्धि का प्रमुख कारण है। प्राकृतिक कारणों में सौर विकरण में परिवर्तन, अत्यधिक बाढ़, सूखा, ज्वालामुखी विस्फोट, भूकम्प, टेक्टोनिक संचलन इत्यादि सम्मिलित हैं। भारत में अधिकांश कृषि प्रमुखतः वर्षा पर निर्भर है जिस पर जलवायु परिवर्तन के कारण मानसून की अनिश्चितता बनी रहती है। वर्षा के असमान वितरण से कही बाढ़ तो कहीं सूखा जैसी स्थितियाँ दृष्टिगोचर हो रही है। जलवायु परिवर्तन की वजह से हुई तापमान में वृद्धि अनियमित वर्षा, वर्षा का कम या ज्यादा होना, बाढ़, अकाल, चक्रवात की संख्या में बढ़ोतरी, पवनों की दिशा में परिवर्तन, पशु पक्षियों पर संकट, दुग्ध उत्पाद पर प्रभाव, वैश्विक मौसम पर प्रभाव हिमालय का बढ़ता तापमान, मंहगाई व निर्धनता इत्यादि पर सीधा असर दिखाई दे रहा है। आज जब धरती का तापमान निरन्तर बढ़ रहा है, ग्लेश्यिर पिघल रहे हैं, ऋतुचक्र अनियमित हो रहा है तवयह विषय केवल भूगोल या पर्यावरण तक सीमित नहीं रहा , यह हमारे अस्तित्व, हमारी जीवन शैली और हमारे, वर्तमान व भविष्य का प्रश्न बन गया है। संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बान की मून ने सच ही कहा है – ''जलवायु परिवर्तन एक स्थायी भविष्य के लिए सबसे बड़ा खतरा है, लेकिन साथ ही जलवायु चुनौती का समाधान करना सभी के लिए समृद्धि, सुरक्षा और उज्जवल भविष्य को बढ़ावा देने का एक सुनहरा अवसर भी प्रदान करती है''।

मुख्य शब्द– पृथ्वी, जलवायु परिवर्तन, भौगोलिक विश्लेषण, तापमान, ऋतुचक्र, उज्जवल भविष्य

Introduction

जलवायु परिवर्तन में ग्रीन हाउस गैसों के मानव उत्सर्जन से प्रेरित वैश्विक तापमान वृद्धि और इसके परिणाम स्वरूप वैश्विक मौसम के पैटर्न में होने वाले व्यापक बदलाव दोनों शामिल हैं। यद्यपि जलवायु परिवर्तन के पहले के भी दौर रहे हैं, लेकिन 20वीं सदी के मध्य से, मनुष्यों ने पृथ्वी की जलवायु प्रणाली पर अभूतपूर्व प्रभाव डाला है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आई.एम.डी) की 15 जनवरी 2025 की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2024 को अब तक विश्व मौसम संगठन के साथ – साथ ज्यादातर वैश्विक संगठन वैश्विक स्तर पर सबसे गर्म वर्ष घोषित कर चुके हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ रही गर्मी के प्रति

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 10, October 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.24191626

वैज्ञानिकों ने चेताया भी है। विश्व मौसम संगठन ने पुष्टि की है कि वर्ष 2025 पिछले 176 वर्षों के जलवायु इतिहास के तीन सबसे गर्म वर्षों में शामिल रहा है। इस रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2023, 2024 व 2025 तीनों अब तक के सबसे गर्म वर्ष साबित हुए हैं। इन तीनों वर्षों का औसत तापमान औद्योगिक काल से पहले की तुलना में 1.48 डिग्री सेल्सियस अधिक दर्ज किया गया, जो 1.5^0C की लक्ष्मण रेखा के करीब है। वर्ष 2025 में पृथ्वी का औसत तापमान सामान्य से 1.44^0C अधिक रहा जो वर्ष 2024 व 2023 के शद तीसरा सबसे ऊँचा स्तर है। जलवायु परिवर्तन से वैश्विक तापमान (ग्लोबल वार्मिंग) जैसी समस्या वैश्विक स्तर पर विकराल रूप धारण कर चुकी है।

जलवायु परिवर्तन की समस्या के समाधान का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी के बढ़ते तापमान को रोकना, ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना और बदलते पर्यावरण के अनुकूल खुद को ढ़ालना है। इस शोध पत्र के माध्यम से शिक्षकों, विद्यार्थियों व सामाजिक संगठनों के माध्यम से सेवा संकल्प का भाव लेकर एक ऐसा वातावरण प्रस्तुत करना है जिससे प्रेरित होकर समाज व देश में जलवायु परिवर्तन के प्रति लोगों में जागरूकता का माहौल बनाकर इससे होने वाली समस्या व समाधान पर विस्तृत रूपरेखा तैयार करके समाधान पर कार्य धारातल पर तैयार करना है, जिससे हम आगे आने वाली पीढ़ी को एक उज्जवल स्वस्थ्य भविष्य दे सकें।

जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI) 2026 – जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक 2026 की रिपोर्ट के अनुसार भारत 23 वें स्थान पर है, जो पिछले वर्ष 2025 में 10 वें स्थान पर था। पिछले वर्ष की तुलना में भारत की रैंकिक में 13 स्थानों की भारी गिरावट आई है। इस गिरावट के बाद भारत ' उच्च प्रदर्शन'' (High Performance) करने वाले देशों की श्रेणी से बाहर होकर ''मध्यम प्रदर्शन'' (Medium Performer) वाले देशों की सूची में आ गया है। जर्मनवाच (Germanwatch) न्यूक्लाइमेट इंस्टीट्यूट और क्लाइमेट एक्शन नेटवर्क इंटरनेशनल द्वारा संयुक्त रूप से जारी रिपोर्ट में बताया गया है कि इस सूचकांक में पहले तीन स्थान (रैंक 1, 2 और 3) खाली रखे गये हैं क्योंकि कोई भी देश ग्लोबल बार्मिंग को 1.5^0C तक सीमित करने के लिए सभी चार श्रेणियों में पर्याप्त रूप से मजबूत प्रदर्शन नहीं कर पाया है। इस प्रकार चौथे स्थान (Rank-4) के साथ डेनमार्क शीर्ष पर है। मूल्यांकन के चार मुख्य आधारों में भारत की इस प्रकार रेटिंग रही है –

1. ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में 40% भारांश के साथ भारत को मध्यम रेटिंग मिली है।

2. ऊर्जा उपयोग में 20% भारांश के साथ भारत को मध्यम रेटिंग मिली है।

3. जलवायु नीति में 20% भारांश के साथ भारत को मध्यम रेटिंग मिली है।

4. नवीकरणीय ऊर्जा में 20% भारांश के साथ भारत को इस क्षेत्र में कमजोर (LOW) रेटिंग मिली है, जो रेटिंग में गिरावट की सबसे बड़ी वजह बनी।

पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक 2026 – पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक अर्थात (EPI) एनवायरमेंटल परफॉरमेंस इंडेक्स एक द्विवार्षिक अन्तर्राष्ट्रीय सूचकांक है। इसे येल यूनीवर्सिटी के येल सेंटर फॉर एनवायरमेंटल लॉ एंड पॉलिसी तथा कोलम्बिया यूनीवर्सिटी के सेंटर फॉर इंटरनेशनल अर्थ सांइस इंफॉर्मेशन नेटवर्क द्वारा

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 10, October 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.24191626

विश्व आर्थिक मंच अर्थात वर्ड इकोनोमिक फोरम के सहयोग से संयुक्त रूप से विकसित और प्रकाशित किया जाता है। इस सूचकांक का प्रारम्भ वर्ष 2006 में हुआ था। यह सूचकांक तीन मुख्य नीतिगत स्तम्भों पर आधारित है, जिनमें जलवायु परिवर्तन शमन, पर्यावरणीय स्वास्थ्य जिसके अन्तर्गत वायु गुणवत्ता, पेयजल स्वच्छता, भारी धातुओं का जोखिम व पारिस्थितिक तंत्र की जीवंतता जिसके तहत् जैव – विविधता, वन, मत्स्य पालन और जल संसाधान सम्मिलित हैं। पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक में तकनीकि संरचना की बात करें तो इसमें 0 – 100 का पैमाना उपयोग किया जाता है, जिसमें 100 का स्कोर सर्वोत्तम प्रदर्शन को दर्शाता है। यह द्विवार्षिक सूचकांक पर्यावरण स्वास्थ्य, पारिस्थितिकी तंत्र की जीवन शक्ति और जलवायु परिवर्तन जैसे 3 नीतिगत उद्देश्यों के तहत 47 संकेतकों का उपयोग करता है। इस रिपोर्ट के अनुसार भारत ने अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छता और जलवायु परिवर्तन शमन में सापेक्ष प्रगति की है, परन्तु वायु गुणवत्ता और जैव विविधता के क्षेत्रों में भारत का प्रदर्शन अत्यन्त खराब रहा है, जो चिंता का विषय है।

3 अगस्त 2026 को जारी ''पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक'' (EPI) 2026 में भारत 177 देशों की सूची में 176 वे स्थान पर रहा है। 22.46 के स्कोर के साथ भारत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नीचे से दूसरे स्थान पर है जिसमें केवल लाओस भारत से नीचे है। दक्षिण एशिया के 8 देशों में भारत 7 वें स्थान पर है। भारत इस सूचकांक में वर्ष 2016 में 141 वें स्थान पर था जिसके बाद वर्ष 2018 में यह 177 वें, वर्ष 2020 में 168 वें, वर्ष 2022 में 180 वें सबसे निचले स्थान पर, व वर्ष 2024 व वर्ष 2026 में लगातार 176 वें स्थान प रहा है।

वैश्विक स्तर पर शीर्ष 10 देशों की सूची

क्र. सं.	देश	स्कोर
1.	एस्टोनिया	74.79
2.	लक्जमबर्ग	74.24
3.	यूनाइटेड किंगडम	71.51
4.	फिनलैंड	71.04
5.	नीदरलैंड	70.49
6.	जर्मनी	69.93
7.	फ्रांस	69.82
8.	नार्वे	69.24
9.	स्वीडन	69.20
10.	आस्ट्रेलिया	66.80
176	भारत	22.46

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 10, October 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.24191626

पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक 2026 में भारत के प्रदर्शन की भारत सरकार ने आलोचना की है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने भारत की 177 देशों में 176 वीं रैंक को खारिज करते हुए इसकी कार्यप्रणाली की आलोचना की है। मंत्रालय का तर्क है कि सूचकांक में एतिहासिक उत्सर्जन, देशों के विकास के चरण और '' समान लेकिन विभेदिक जिम्मेदारियों'' (CBDR) के वैश्विक सिद्धान्तों की अनदेखी की गई है।

जलवायु परिवर्तन एक समस्या के रूप में – जलवायु परिवर्तन विश्व की सबसे ज्वलंत पर्यावरणीय समस्याओं में से एक है। जलवायु परिवर्तन से होने वाली प्रमुख समस्याओं को बिन्दुवार दर्शाया गया है–

1. **अल नीनो का वैश्विक मौसम पर प्रभाव** – विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) के अनुसार अलनीनो अगस्त से अक्टूबर 2026 तक और मजबूत होगा, जिससे विश्व भर के कई देशों में मौसम व जलवायु प्रभावित होगी। जलवायु परिवर्तन की दृष्टि से भारत में समान्य से अधिक गर्मी और सामान्य से कम वर्षा होने की आशंका है। भारत के 315 जिले सूखे के जोखिम में हैं। सकारात्मक इंडियन ओशन डाइपोल (IOD) और गर्म समुद्र अल नीनो के प्रभाव को और बड़ा सकते है। अफ्रीका, दक्षिणी यूरोप, अरब प्रायद्वीप, भारतीय उपमहाद्वीप, पूर्वी एशिया, मध्य अमेरिका, कैरेबियन और दक्षिणी अमेरिका में सामान्य से अधिक तापमान रहने की सम्मावना है। (WMO) विश्व मौसम संगठन ने सूखा, बाढ़, जंगलों में आग और भीषण गर्मी जैसी चरम घटनाओं का खतरा बताया है, जिसमें वैश्विक खाद्य सुरक्षा पर गम्भीर संकट आ सकता है। अल नीनो के साथ हिन्द महासागर में सकारात्मक IOD मानसून को और कमजोर करेगा, जिससे कृषि व जल संसाधनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। देश में जून से सितंबर 2026 के बीच सामान्य से 13 फीसदी कम बारिश हुई। आई एमडी के अनुसार वर्ष 2001 के बाद यह चौथा सबसे कमजोर मानसून रहा। देश 868.6 मिलीमीटर के सामान्य औसत के मुकाबले 759.4 मिलीमीटर ही बारिश दर्ज की गई।

2. **केरल की बाढ़ : पारिस्थितिकीय क्षरण और अस्थिर भू उपयोग की सीख** – केरल में 2026 की बाढ़ सिर्फ अत्यधिक बारिश नहीं, अपितु जलवायु परिवर्तन और दशकों के खामियों से भरे विकास का नतीजा है। वर्ष 2018 में विनाशकारी बाढ़ के बावजूद राज्य ने पारिस्थितिकीय क्षरण को रोकने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठाए, जिससे प्रतिवर्ष बाढ़ अपना विकराल रूप धारण करती जा रही है। 31 जुलाई से 2 अगस्त 2026 के बीच केरल में सामान्य से तीन गुना अधिक 13.9 सेमी. वर्षा हुई, जिसमें कई स्थानों पर क्लाउडबर्स्ट जैसी स्थिति बनी। इडुक्की, पत्तनभतिट्टा व कोट्टायम की ऊँची पहाड़ियों पर एक ही दिन में कई भूस्थलन हुए, जिससे व्यापक तबाही हुई। परियार, भारतपूसा, चालियार, चालकुडी, पम्बा, मणिमाला, मीनाचिल और अचनकोविल जैसी नदिया एक साथ उफान पर आ गई, जिससे मध्य और उत्तरी केरल के कई इलाके जलमग्न हो गये। 5 अगस्त 2026 तक बाढ़ में 28 लोगों की मौत हो चुकी थी और 418 राहत शिवरों व 18434 लोगों को शरण दी गई थी।

3. **सूखे का खतरा** – सुपर एल नीनो 2026 के दक्षिण – पश्चिम मानसून को कमजोर कर रहा हैं जिसमें भारत के 315 जिले सूखे के जोखिम में है। जुलाई में भारी बारिश के बावजूद देश को अभी भी सूखे के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि मानसून की अनियमितता बनी हुई है। उत्तर प्रदेश में गंगा और यमुना की 20 से अधिक सहायक नदियों को सरकारी रिकॉर्ड में ''नाला'' घोषित कर दिया गया है। जिससे उनका संरक्षण मुश्किल हो गया है। करोड़ों भारतीय फिर से खेती की ओर लौट रहे है – यह घटना

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 10, October 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.24191626

औपनिवेशिक काल के बाद नहीं देखी गई थी जो रोजगार बाजार की विफलता को दर्शाता है। ईधन फसलें (मक्का, गन्ना) भारत में खाद्य फसलों को विस्थापित कर रही हैं, जबकि कृषि – अपशिष्ट से टिकाऊ इथेनाल उत्पादन में प्रगति धीमी है।

4. प्रवासी पक्षियों का संकट – 51 % आबादी में गिरावट – जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया के 51% प्रवासी पक्षियों की आबादी लगातार घट रही है, जबकि लगभग 300 प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर है। प्रवासी पक्षी केवल मौसम बदलों का संकेत नहीं देते बल्कि वे महाद्वीपों, महासागरों और परिस्थितिकी तंत्रों को जोड़ने वाली प्रकृति की सबसे मजबूत जीवंत कड़ी है। वैज्ञानिकों का कहना है कि प्रवासी पक्षियों को बचाने के लिए जलवायु परिवर्तन में हो रहे, परिवर्तन को रोकना होगा। जलवायु परिवर्तन के साथ, आद्रभूमियों और जंगलों का विनाश, कीटनाशकों का बड़ता उपयोग, ऊँची इमारतों से टकराव, अवैध शिकार व पालतू जीवों का व्यापार इनके अस्तित्व पर गम्भीर खतरा है।

5. जलवायु परिवर्तन से भारत मे दुग्ध उत्पादन पर संकट – विश्व की सबसे बड़े दुग्ध उत्पादक देश भारत में जलवायु परिवर्तन के कारण बदलते मौसम और बढ़ते तापमान का दुग्ध उत्पादन पर गम्भीर प्रभाव पड़ा है। साइंटिफिक रिपोर्टस में प्रकाशित और आईसीएआर राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार उत्तर–पश्चिम भारत के ट्रांस – गंगा के मैदानी इलाकों, विशेषकर हरियाणा में जलवायु परिवर्तन के कारण मवेशियों, मुख्य रूप से गैंसों के दूध उत्पादन में गिरावट दर्ज की गई है। इस रिपोर्ट में बताया गया गया कि वर्ष 2004 से 2019 तक के आँकड़ों का विश्लेषण कर पाया कि जुलाई व अगस्त के महीनों में जब तापमान 38^0C से अधिक और अद्रिता 70% के उपर पहुँच जाती है, तो इसका नकारात्मक प्रभाव दुग्ध उत्पादन पर सर्वाधिक और अद्रिता 70% के उपर पहुँच जाती है, तो इसका नकारात्मक प्रभाव दुग्ध उत्पादन पर सर्वाधिक पड़ता है। भैंसों की त्वचा का रंग गहरा होने, शरीर पर बाल कम होने और पसीने की ग्रंथियों की कमी के कारण वे सौर विकरण को जल्दी अवशोषित कर लेती हैं, जिससे उनका शरीर संतुलन बिगड़ जाता है और वे कम आहार लेती हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण न केवल पशुओं का स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है बल्कि हरे चारे की कमी, पानी का संकट और बीमारियों का प्रकोप भी बढ़ता जा रहा है। अनुमान है कि जलवायु परिवर्तन के कारण वर्तमान में देश को सालाना 3.2 मिलियन टन दूध का नुकसान हो रहा है, जिसकी आर्थिक कीमत लगभग 2661 करोड़ रूपये आंकी गई है।

6. उष्ण कटिबंधीय वनों का प्रकाश संश्लेषण क्षमता पर बढ़ता संकट – ''प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ सांइसेज'' में प्रकाशित और स्विट्जरलैंड के (ईपीएफएल) संस्थान के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया कि अत्यधिक तापमान के कारण पत्तियों में मौजूद वे प्रोटीन टूटने लगते हैं, जो प्रकाश – संश्लेषण की प्रक्रिया को संचालित करते हैं। जिस तरह अत्यधिक गर्मी में मानव शरीर की क्षमता प्रभावित होती है ठीक उसी तरह एक निश्चित तापमान सीमा से उपर जाने पर पौधे भोजन बनाना, ऑक्सीजन छोड़ना और कार्बन इाडऑक्साइड सोखना कम कर देते हैं, जिससे उनके सूखने और नष्ट होने का खतरा बढ़ जाता है। उपग्रह आधारित रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2001 से 2020 के बीच अत्यधिक गर्मी से प्रभावित उण्णकटिबंधीय वन क्षेत्र 43 मिलियन हेक्टेयर से बड़कर 57 मिलियन हेक्टेयर हो गया है, जो फ्रांस के कुल क्षेत्रफल से भी बड़ा है। शोधकर्ताओं के अनुसार यदि तापमान इसी तरह बढ़ता रहा तो वर्ष 2050

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 10, October 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.24191626

तक यह प्रभावित क्षेत्र बढ़कर 93 मिलियन हेक्टेयर और वर्ष 2100 तक 160 मिलियन हेक्टेयर हो सकता है। उष्ण कटिबंधीप वन विश्व के सबसे महत्वपूर्ण कार्बन सिंक माने जाते हैं, ऐसे में इनकी कार्बन अवशोषण क्षमता घटने से वैश्विक तापमान मे तीव्र गति से बढ़ोतरी होगी। अत्यधिक गर्मी तथा लू (हीटवेव) के कारण उष्णकटिबंधीय वनों के वृक्ष अपनी शहनशीलता की सीमा पार कर रहे हैं, जिससे उनकी प्रकाश – संश्लेषण करने और कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने की क्षमता गम्भीर रूप से प्रभावित हो रही है।

7. गहरे समुद्र खनन व मानवीय गतिविधियों से जैव विविधता पर संकट – अन्तरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन) द्वारा जारी रेड लिस्ट के नवीनतम संशोधन के अनुसार गहरे समुद्र में खनन, असन्तुलित औघोगिक विकास व जलवायु परिवर्तन के कारण विश्व भर में जैविक विविधता पर संकट बढ़ रहा है। गहरे समुद्र के हाइड्रोथर्मल वेंट (समुद्र तल पर स्थित गर्म पानी के प्राकृतिक झरने हैं। जहाँ पृथ्वी की पपड़ी के नीचे से अत्यधिक गर्म और खनिजों से भरपूर पानी बाहर निकलता है, इस पर रहने वाली मोलस्क प्रजातियों (कोमल शरीर वाले जीव) उदाहरण – स्केली फुट घोंघा, लेपोटोड्रिलस आदि में से 62% विलुप्त की कगार पर पहुँच गई है। आईयूसीएन की रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान में कुल 175909 प्रजातियों का मूल्यांकन किया जा चुका है, जिनमें से 49505 प्रजातियाँ जलवायु परिवर्तन के कारण विलुप्त होने की कगार पर खड़ी है।

8. जलवायु परिवर्तन से खाद्य वस्तुओं की मंहगाई बढ़ी – जलवायु परिवर्तन का प्रभाव सिर्फ चरम मौसमी घटनाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इससे खाद्य उत्पादन भी प्रभावित हुआ। इसका असर खाने – पीने की चीजों की कीमतों पर स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। जीरो कार्बन एनालिटिक्स की नई रिपोर्ट के अनुसार जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम में ही बदलाव स्थानीय स्तर पर होने वाली अस्थायी खाद्य कमी को लम्बे समय तक ऊँची बनी रहने वाली कीमतों की समस्या में बदल रहे हैं। रिपोर्ट के साथ कीमतों में बढ़ोतरी का जो मानचित्र जारी किया है 16 मामले उस अकादमिक अध्ययन से लिए गये हैं, जिस पर इसकी पद्धति आधारित है। वर्ष 2024 के बाद खाद्य आपूर्ति को प्रमाणित करने वाले 12 नये मामलों को इसमें सम्मिलित किया गया है। देश में जुलाई 2026 में तोरई की उपभोक्ता कीमत पिछले वर्ष की तुलना में 32 फीसदी, टमाटर की 31 फीसदी व हरी फलियों की कीमत 24 फीसदी बढ़ी है। ब्रिटेन में मई 2023 से अप्रेल 2024 में 12 महीनों की अवधि रिकॉर्ड पर ज्यादा वर्षा वाली रही। खेतों में पानी भरने से पशुपालन प्रभावित हुआ। अमेरिका में सितंबर 2025 से फरवरी 2026 के बीच ग्रेट प्लेंस क्षेत्र में 26 साल में एक बार आने वाली गम्भीर सूखे की स्थिति रही। ब्राजील में 2024 के दौरान सितंबर तक अरबिका कॉफी उगाने वाले क्षेत्र में रिकॉर्ड सूखा पड़ा। इससे कॉफी के फल बनने की प्रक्रिया प्रभावित हुई।

9. जलवायु परिवर्तन शीलता और निर्धनता – राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान (NISER) द्वारा अप्रेल 2026 में प्रकाशित एक अध्ययन ने भारत में जलवायु परिवर्तन और गरीबी के बीच गहरे सम्बन्ध को रेखांकित किया है। भारत में 21 राज्यों के 593 जिलों पर आधारित यह अध्ययन दर्शाता है कि बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा, बाढ़ और सूखे जैसे जलवायु आघात निर्धनता के स्तर को बढ़ाते हैं। निर्धनता अब केवल आर्थिक कारकों से प्रेरित नहीं हैं, बल्कि तेजी से जलवायु परिवर्तनशीलता द्वारा निर्धारित हो रही है। तापमान भिन्नता में एक – इकाई की वृद्धि की संभावना को 31.1 % तक बढ़ा देती है। जो आजिविका पर चरम मौसम के गम्भीर प्रभाव को दर्शाती है। इसी प्रकार बाढ़ प्रभावित क्षेत्र और अनियमित वर्षण पैटर्न फसलों, बुनियादी ढ़ांचे और जल की उपलब्धता को नुकसान पहुँचाते हैं। जिससे संबेदनशील आबादी हानि और

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 10, October 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.24191626

सुधार के अंतहीन चक्र में फँस जाती है। अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी है कि सूखा – प्रवण और कृषि – निर्भर क्षेत्रों की दोहरी संवेदनशीलता अत्यंत गम्भीर है। जो जिले सूखा प्रवण होने के साथ – साथ खेती पर निर्भर हैं, उनमें उच्च निर्धनता की सम्भावना 83% अधिक है। बार – बार फसल की विफलता, कृषि आय में गिरावट और बढ़ती कर्ज की दर एक दुष्चक्र पैदा करती है। वैकल्पित अजीविका के अवसरों का अभाव विविधीकरण को रोकता है, जिससे न केवल फसलें बल्कि पशुपालन, मत्स्य पालन तथा वन आधारित आजीविका भी प्रभावित होती है। इस अध्ययन में बताया गया है कि छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखंड, बिहार तथा पश्चिम बंगाल जैसे पूर्वी राज्यों में आर्थिक विविधीकरण की कमी के कारण निर्धनता का स्तर उच्च है। इसके विपरीत केरल, कर्नाटक, तमिलनाडू, गुजरात और महाराष्ट्र जैसे दक्षिणी और पश्चिमी राज्यों में मजबूत सेवा केन्द्र व बेहतर मानव पूँजी के कारण निर्धनता कम है। भारत की वर्तमान जलवायु और निर्धनता नितियाँ जिनमें जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना (NAPCC) और SDG ढ़ाँचा शामिल है, उप राष्ट्रीय स्तर पर कार्यान्वयन के अन्तराल का सामना कर रही है।

जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ता हिमालय का तापमान – जलवायु परिवर्तन का असर अब भारतीय हिमालयी क्षेत्रों में अलग – अलग तरीकों से खुलकर सामने आने लगा है। हाल ही में '' जर्मन ऑफ अर्थ सिस्टम सांइस'' में प्रकाशित एक शोध अध्ययन में चिंताजनक सच सामने आया है, जिसमें बताया गया है कि पश्चिमी हिमालय मध्य व पूर्वी हिमालय की तुलना में तेजी से गर्म हो रहा है, जिससे सदी के अंत तक मौसमी बर्फ का बड़ा हिस्सा खोने का खतरा है। यह स्थिति सिंधु, गंगा, और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों के जलस्रोतों को प्रभावित कर 1.5 अरब लोगों के जीवन पर असर डालेगी। शोध में बताया है कि लद्दाख, जम्मू–कश्मीर और हिमाचल प्रदेश बहुत तेजी से गर्म हो रहे हैं। अध्ययन के अनुसार यदि वैश्विक स्तर पर कार्बन उत्सर्जन में भारी कमी नहीं की गई तो इस सदी के अन्त तक पश्चिमी हिमालय क्षेत्र अपनी मौसमी बर्फ का एक बड़ा हिस्सा खो सकता है। 120 सालों का रिकॉर्ड और वैश्विक जलवायु मॉडल पर बिरला इंस्टीटयूट ऑफ टेक्नोलॉजी (बी आई) मेसरा, भारतीय उष्ण कटिबन्धीय मौसम विज्ञान संस्थान (आई आई टी एम) पुणे, और अशोका यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों द्वारा सयुंक्त रूप से शोध किया गया। शोधकर्ताओं ने 1901 से 2020 तक के 120 वर्षों के वास्तविक तापमान आकड़ों का विश्लेषण किया और आठ जलवायु मण्डलों के आधार पर वर्ष 2100 तक के संभावित परिदृष्यों का आंकलन किया। पूरे भारतीय हिमालय के तीन भागों – पश्चिमी, मध्य (उत्तराखंड) और पूर्वी (सिक्किम, अरूणाचल प्रदेश व पूर्वात्तर) में बाँटकर अध्ययन किया। इस रिपोर्ट में जो सबसे स्पष्ट और गम्भीर रूझान सामने आया है, वह है न्यूनतम यानी रात के तापमान का तेजी से बढ़ना। दिन के मुकाबले रातें ज्यादा गर्म हो रही हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि जब रातें ठण्डी नहीं होंगी तो जमी हुई बर्फ को वापस सख्त होने में समय नहीं मिलेगा, जिससे बर्फ के पिघलने की दर कई गुना तेज हो जायेगी और नदियों में पानी पहुँचते का प्राकृतिक समय चक्र बदल जायेगा। अध्ययन में चेतावनी दी गई है कि यदि वर्तमान रफ्तार से कोयला और पेट्रोल का उपयोग जारी रहा तो वर्ष 2081 – 2100 की बीच परिचमी हिमालय में सर्दियों का तापमान 1900 के शुरूआती दशक की तुलना में 7.18^0C तब बढ़ सकता है। वहीं कम उत्सर्जन वाले परिदृश्य में भी बसंत के मौसम में बर्फ पिघलने का नुकसान सतत बना रहेगा। सर्दी के अन्त तक उच्च उत्सर्जन की स्थिति में बसंत की बर्फ का नुकसान 95.9 किग्रा. प्रति वर्ग मीटर तक पहुँच सकता है, जिससे कई इलाकों से मौसमी बर्फ लगभग गायब हो सकती है। यद्यपि पूर्वी हिमालय में तापमान में वृद्धि की दर पश्चिमी भाग से कम है, फिर भी यह

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 10, October 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.24191626

क्षेत्र सुरक्षित नहीं है। शोधकर्ताओं के अनुसार पूर्वी हिमालय क्षेत्र ग्लेशियल लेक बर्स्ट फलड (ग्लोफ) यानी ग्लेशियर से बनी झीलों के अचानक फटने से आने वाली तबाही का हॉटस्पॉट बनता जा रहा है। आने वाले दशकों में ग्लेशियरों के पीछे खिसखने से यह खतरा पश्चिमी हिमालय की ओर भी फैलने की संभावना है।

जलवायु परिवर्तन एक समाधान के रूप में – जलवायु परिवर्तन की समस्या से सारा विश्व प्रभावित हो रहा है। इस समस्या का समाधान करने के लिए हमें ऊर्जा की बचत करनी होगी, अधिक से अधिक वृक्ष लगाने होंगे, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना होगा, जल संरक्षण करना होगा तथा जागरूकता को बढ़ाना होगा। हमें अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में बदलाव लाना होगा और स्थायी विकास की ओर स्थापित करना होगा। इस समस्या का समाधान करने के लिए वैज्ञानिकों, शिक्षकों, विद्वानों के साथ – साथ विद्यार्थियों को भी संकल्प के साथ कदम उठाना होगा। हमें जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए एक जुट होकर करना होगा और एक स्थायी भविष्य की ओर स्थापित करना होगा।

25 मार्च 2026 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेशन को सूचित किए जाने वाले भारत के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (2031–2035) को मंजूरी प्रदान की है। भारत ने 2005 के स्तर से 2035 तक अपने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की उत्सर्जन तीव्रता को 47% तक कम करने का संकल्प लिया है। अब भारत का लक्ष्य 2035 तक गैर – जीवाश्म ईधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से 60% संचयी विद्युत शक्ति संस्थापित क्षमता प्राप्त करना है। अब भारत 2005 के स्तर की तुलना में 2035 तक वन और वृक्ष आवरण के मध्यम से 3.5 से 4. 0 विलियन टन कार्बन डाईऑक्साइड समतुल्य कार्बन लिंक का निर्माण करेगा। भारत की यह प्रतिवद्धताएं 2047 तक विकसित भारत और 2070 तक नेट – जीरो के लक्ष्य के अनुरूप है। 2031 – 2035 की अवधि के लिए भारत के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) को मंजूरी मिलने से जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएन एफसीसीसी) और इसके पेरिस समझौते के तहत विकास और जलवायु न्याय के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को भी बल मिलेगा। देश का 2030–35 का राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) विकसित भारत की परिकल्पना से प्रेरित है, जो केवल 2047 का लक्ष्य नहीं, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए एक समृद्ध और जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूल भारत बनाने के लिए वर्तमान में कदम उठाने की प्रतिबद्धता है। भारत में क्रमिक जलवायु लक्ष्य भारत की पिछली प्रतिबद्धताओं पर आधारित हैं, जिनमें से कई को निर्धारित समय से पहले ही अर्जित कर लिया गया है, जो जलवायु कार्यवाही में देश के निरंतर अच्छे प्रदर्शन को दर्शाता है। पाँच गुणात्मक लक्ष्यों का उद्देश्य सतत विकास को रोजमर्रा की जिन्दगी और शासन प्रणालियों में समाहित करना, जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूल विकास के मार्गों को बढ़ावा देना और समाज के सभी वर्गों के लिए एक न्यायसंगत और समावेशी परिवर्तन को सक्षम बनाता है।

जलवायु परिवर्तन के प्रति सकारात्मक प्रतिवद्धताओं को आगे बढ़ाते हुए भारत ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने की दिशा में समय – समय पर अपनी महत्वाकांक्षाओं को बढ़ा रहा है तथा 2022 में किये गये अपडेट के बाद अब उसने 2031 – 35 के लिए अपने लक्ष्यों की घोषणा की है, जो 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। भारत की मूल जलवायु प्रतिबद्धताएं, अर्थात 2015 में प्रस्तुत एनडीसी ने एक मजबूत आधार तैयर किया था, जिसमें 2030 तक जीडीपी की उत्सर्जन तीव्रता में 33 – 35 प्रतिशत की कमी और गैर जीवाश्म संसाधनों पर आधारित विद्युत

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 10, October 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.24191626

ऊर्जा की संस्थापित क्षमता में 40% हिस्सेदारी का लक्ष्य रखा गया था। ये दोनों ही निर्धारित समयसीमा से क्रमंशः 11 वर्ष व 9 वर्ष पहले ही प्राप्त कर लिए गये जो जलवायु परिवर्तन के प्रति शासन एक विश्वसनीय और कार्यवाही – उन्मुख दृष्टिकोण को दर्शाता है। 2005 से 2020 के दौरान हमारी उत्सर्जन तीव्रता मे 36% की कमी आई है। अब लक्ष्य को बड़ाकर 2035 तक 47%कर दिया गया है। सन्स्थापित विद्युत क्षमता में गैर जीवाश्म ईंधन ऊर्जा संसाधनों की हिस्सेदारी बढ़ाने के लक्ष्य की दिशा में देश में 52. 27% गैर जीवाश्म क्षमता (फरवरी 2026) अर्जित करली है, जो निर्धारित समय सीमा से पाँच वर्ष पहले ही लक्ष्य को पूरा करने के बराबर है। अब लक्ष्य को और बढ़ाकर 2035 तक स्थापित विद्युत क्षमता में और जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों की 60% हिस्सेदारी तक पहुँचा दिया गया है। वन और वृक्ष आवरण के माध्यम से अतिरिक्त कार्बन सिंक बनाने के एनसीडी लक्ष्य के संबंध में भारत ने 2021 तक पहले ही 2. 29 बिलियन टन कार्बन डाईऑक्साइड के समतुल्य कार्बन सिंक बना लिया है। वनीकरण और इकोसिस्टम बहाली के प्रयास ग्रामीण आजीविका की सहायता करते हुए भारत के कार्बन सिंक लक्ष्यों में योगदान दे रहे हैं। हमारे वृक्षारोपण के प्रयासों को खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) जैसी स्वतंत्र एजेंसियों द्वारा मान्यता दी गई है, जिसने वन क्षेत्र में शुद्ध वृद्धि के मामले में नौवाँ स्थान दिया गया है। स्वच्छ ऊर्जा और हरित विकास को गति प्रदान करने के लिए व्यापक स्तर पर नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार, बैटरी भंडारण प्रणाली, हरित ऊर्जा गलियारे, स्वच्छ विनिर्माण और देश भर में विश्वसनीय और टिकाऊ बुनियादी ढ़ांचे को सुनिश्चित करना शामिल है। यह संस्थागत क्षमता नवो–मेवण इकोसिस्टम और स्थानीय स्तर पर अनुकूलन उपायों को मजबूत करने पर बल देती है और यह सुनिश्चित करती है कि जलवायु संबंधी विचार अर्थव्यवस्था के प्रमुख सेक्टरों में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से एकीकृत हों। इनमें ग्रीन हाउस मिशन, पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना, उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाएं, पीएम – कुसुम (प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाअभियान), कार्बन कैप्चर, यूटिलाइजेशन एवं स्टोरेज (सीसीयूएस) को बढ़ावा देना तथा परमाणु ऊर्जा शामिल है।

जलवायु अनुकूलन को बढ़ावा देने के लिए जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को पहले से ही महसूस किया जाने लगा है। जिसमें मैंग्रोव बहाली, तटीय विनियम और जलवायु – अनुकूलन अवसंरचना के माध्यम से संवेदनशील तटीय क्षेत्रों का संरक्षण, चक्रसतों और तूफानी लहरों के लिए प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली, हिमालयी राज्यों में हिमनदों की निगरानी, जैव विविधता संरक्षण और सतत आजीविका के लिए लक्षित कार्यक्रम, भूस्खलन और हिमनद झील विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ के जोखिम से निपटने के लिए जलवायु अनुकूलन अवसंरचना, राज्यों में हीट एक्शन प्लान का कार्यान्वयन, समुदाय आधारित आपदा तैयारी और अनुकूलन कार्यक्रम प्रमुख है। भारत में जलवायु संबंधी प्रयास ''पर्यावरण के लिए जीवनशैली (लाइफ)'' के सिद्धान्त पर केन्द्रित है, जो सतत जीवन को एक जन आंदोलन में बदल रहा है और '' एक पेड़ माँ के नाम'' जैसी पहल वृक्षारोपण को लोक आधारित जलवायु कार्यवाही में परिवर्तित कर रही है। भारत सरकार के इन महत्वपूर्ण प्रयासों के वाबजूद जलवायु परिवर्तन की समस्या के समाधान हेतु कुछ सुझाव दिये गये हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 10, October 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.24191626

1. नवीकरणीय ऊर्जा अपनाये– कोयले और पेट्रोल जैसे जीवाश्म ईंधन के बजाय सौर ऊर्जा (Solar Energy) और पवन ऊर्जा (Wind energy) का उपयोग बढ़ाकर हम जलवायु परिवर्तन को रोक सकते हैं।

2. अधिक से अधिक वृक्षारोपण – पेड़ हवा से कार्बन हाईऑक्साइड गैस को सोखते हैं। इसलिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर वनों की कटाई को रोकें।

3. सार्वजनिक परिवहन का प्रयोग – निजी गाड़ियों की जगह आवागमन में बस, मेट्रो, ट्रेन या इलेक्ट्रिक स्कूटी वाहनों का प्रयोग कर जलवायु परिवर्तन को रोक सकते हैं।

4. दूसरों को शिक्षित करें – जलवायु परिवर्तन के बारे जानकारी फैलाऐं और दूसरों को भी ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए प्रेरित करें।

5. नीतियों का समर्थन करें – ऐसी नीतियों का समर्थन करें जो पर्यावरण संरक्षण और सतत प्राथमिकताओं को प्राथमिकता देते है।

6. कम करें, पुनः उपयोग करें, पुनर्चक्रण करें– कचरे को कम करने के लिए वस्तुओं का पुनर्चक्रण (Recycle) और पुनः उपयोग (Reuse) करें। इससे नये उत्पाद बनाने के लिए आवश्यक ऊर्जा (Energy) की मात्रा कम होती है।

7. ऊर्जा बचाऐं – कुशल ऊर्जा उपकरण का प्रयोग करें, अनप्लग करें आवश्यकता न हाने पर पंखा, टीवी, कूलर, ऐसी, को बंद करें ताकि बिजली का उपयोग कम हो सके। हर छोटा प्रयास मदद करता है, और मिलकर हम सब एक नया बदलाव ला सकते हैं।

8. जागरूकता – शिक्षकों, विद्यार्थियों व सामाजिक संगठनों (जो पर्यावरण प्रेमी हैं) का दायित्व बनता है कि जलवायु परिवर्तन की बागडोर अपने हाथों में लेकर लोगों को जागरूक करे। N.S.S व N.C.C. से जुड़े विद्यार्थियों इसके प्रति सजग करें। संकल्प लेकर जलवायु परिवर्तन की समस्या व समाधान पर गोष्ठी, काव्य गोष्ठी, निबन्ध लेखन, राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय सेमिनार के माध्यम से इस पर बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए एक रूपरेखा तैयार की जा सकती है।

निष्कर्ष– जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक समस्या है। वायुमंडल का तापमान दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। जीवश्म ईंधन के उपयोग से ग्रीन हाउस गैसें और कार्बन डाइऑक्साइड का उप्सर्जन होता है, जिससे लगभग सभी देश प्रभावित हैं। यदि वैश्विक तापक्रम वृद्धि को नियंत्रित नहीं किया गया तो, इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। इसलिए सभी देशों को मिलकर वायुमंडल में उत्सर्जित होने वाली गैसों की मात्रा को कम करने के लिए कार्य करने की अत्यधिक आवश्यकता है। लोगों को वृक्षारोपण में शामिल होना चाहिए जिससे वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करने में मदद मिलेगी। सभी को मिलकर जीवाश्म ईंधन का उपयोग कम करना चाहिए। जलवायु परिवर्तन का अधिकांश कारण मानवीय गतिविधियाँ हैं। मानव द्वारा की गई अधिकांश गतिविधियाँ, जिनमें ईंधन का उपयोग शामिल है, वैश्विक तापमान वृद्धि में योगदान देती है। यदि ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा बढ़ती रही तो वायुमंडलीय तापमान में वृद्धि होगी और इसके प्रतिकूल प्रभाव बढ़ेंगे। यदि उत्सर्जन को कम से कम किया जाय और नियंत्रण में रखा जाय तो जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न ग्लोबल वार्मिंग वृद्धि के प्रतिकूल प्रभावों के जोखिम को कम करने में मदद मिलेगी। जलवायु परिवर्तन कोई दूर की समस्या नहीं है, यह हमारे वर्तमान का सच है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 10, October 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.24191626

हमने विकास की रफ्तार चुनी हैं, अब जिम्मेदारी की रफ्तार भी हमें ही चुननी होगी। यदि हम आज समझदारी दिखाऐं, तो आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित धरती दे सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. भारतीय मौसम विज्ञान (IMD) 2025 की रिपोर्ट
2. प्रतियोगिता दर्पण व क्रानिकल मासिक पत्रिकाऐं
3. योजना व कुरूक्षेत्र से सम्बन्धित लेख।
4. पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांकः 2026
5. जलवायु भूगोल – डी.एस. लाल
6. दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान व दैनिक भास्कर में सम्बन्धित लेख व सम्पादकीय
7. विश्व मौसम संगठन (WMO) की रिपोर्ट – 2026
8. अन्तरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन) रिपोर्ट – 2026
9. राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान (NISER) रिपोर्ट अप्रेल 2026
10. जर्मन ऑफ अर्थ सिस्टम साइंस रिपोर्ट – 2026
11. प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ सांइसेज की रिपोर्ट – 2026
12. जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CGPI) 2026 की रिपोर्ट